

Research Article

केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

Usha Sharma

Assistant Professor, S.S. Jain Subodh Mahila T.T. College, Sanganer, Jaipur, Rajasthan, India.

DOI: <https://doi.org/10.24321/2456.0510.202616>

I N F O

E-mail Id:

ushasharma575@gmail.com

Orcid Id:

<https://orcid.org/0009-0000-6660-0533>

How to cite this article:

उषा शर्मा, केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन Anu: a, Mul, Int, Jour, 2026; 11(3&4): 9-14.

Date of Submission: 2026-03-17

Date of Acceptance: 2026-05-07

A B S T R A C T

मूल्य हमारी स्वयं की अभिवृत्ति का वह कार्य है जिसकी उपयोगिता एक व्यक्ति, समाज, राष्ट्र अथवा सम्पूर्ण विश्व के लिये उपयुक्त एवं महत्वपूर्ण है और साथ ही वह आस्तिकमय तथा निर्धारित प्रवृत्ति भी हैं। मूल्य सम्बन्धों को संतुलित करके व्यवहारों में एक रूपता व आत्मीयता स्थापित करते हैं। मूल्य की कल्पना मानव अस्तित्व को उसको पूर्णरूप में स्वीकृत किये बिना सम्भव नहीं है। मूल्य की अपनी एक प्राकृतिक व्यवस्था है, मूल्य स्वयं एक व्यवस्था है जो मानव जीवन को संस्कारित करती है। मूल्य विकास के क्रम में मानव सबसे पहले इन्द्रिय विषय बोध अर्थात् सुख व आनन्द को मूल्यवरण का आधार बनाता है। तत्पश्चात् सुख के साथ ही मूल्यवरण में सुरक्षा का भाव भी समाविष्ट हो जाता है और अन्त में अपने सुख, सुरक्षा एवं हित के साथ-साथ समाज के हित एवं सुरक्षा का भाव भी मानव में पनपता है तथा इसको दृष्टिगत रखते हुए वह मूल्यों का वरण करता है। मानव में समष्टि हित का यही भाव उसमें निहित उच्चतम मूल्यों का द्योतक है। उच्चतम मूल्यों से युक्त होने पर व्यक्ति अपने जीवन का लक्ष्य मात्र अपने सुख, समृद्धि तक एव सीमित ना रखकर समष्टि के सुख, समृद्धि एवं सुरक्षा तक विस्तृत कर देता है अर्थात् किसी भी व्यक्ति के जीवन में सन्तुष्टि के लिये सुख, समृद्धि एवं सुरक्षा महत्वपूर्ण कारक होते हैं, जिन्हें मूल्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अवश्य प्रभावित करते हैं। वर्तमान में व्यक्ति के जीवन मूल्य उसके प्रेरणा स्रोत माने जाते हैं। अतः जीवन के प्रत्येक क्षेत्र (सामाजिक, संवेगात्मक, गृह एवं स्वास्थ्य) में समायोजन आवश्यक है। जब कोई व्यक्ति किसी समाज का सदस्य बनता है, तब उसको समाज में रहने वाले व्यक्तियों का ध्यान रखते हुये, अपने व्यवहार व क्रियाकलापों तथा मूल्यों में समायोजन स्थापित करना पड़ता है। इस समायोजन हेतु आवश्यक गुणों के विकास के लिये व्यक्ति को संस्कारों एवं जीवन मूल्यों का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है। सभी मूल्यों का स्रोत मानव विवेक होता है तथा वे मानव के संचित अनुभव से उद्भूत होते हैं। वही उसे सद्-असद्, उचित-अनुचित, सही-गलत का ज्ञान प्रदान करते हैं। मूल्य अपने में एक अवधारणा है तथा किसी भी वस्तु को मूल्यमय उद्घाटित करने के लिए तीन उद्देश्य हो सकते हैं:- पहला - यह कि उस वस्तु में स्वतः सिद्ध मूल्य है, दूसरा - यह कि वह उन विद्यमान मूल्यों की अभिवृद्धि करने में सहायता प्रदान करता है तथा तीसरा - यह कि उसमें कुछ अप्रकट मूल्य है जो परिस्थिति विशेष में प्रकट होंगे।

मुख्य शब्द: अभिवृत्ति, प्रवृत्ति, अस्तित्व, सामाजिक, संवेगात्मक, समष्टि, आत्मीयता, अवधारणा, समायोजन, मूल्य, समृद्धि

अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षा बालक का समाजीकरण कर, उसे समाज में रहने योग्य बनाती है, जिससे कि बालक समाज में रहते हुए अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सके। लेकिन वर्तमान समय में बालकों के अन्दर अपराधीकरण की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वे समाज विरोधी कार्यों में लिप्त हो रहे हैं। जिससे उनका मूल्य पतन हो रहा है। क्या वे शिक्षा से मूल्य ग्रहण नहीं कर रहे हैं? या फिर उन्हें विद्यालय में मूल्यों को प्राप्त करने का उचित वातावरण नहीं मिल पा रहा है? ये प्रश्न अत्यन्त विचारणीय हैं। मनुष्य समाज में ही जन्म लेता है समाज में ही शिक्षा ग्रहण करता है समाज में ही उसका पालन पोषण होता है और समाज में ही वह अपना समायोजन करता है। प्रत्येक समाज के अपने कुछ निर्धारित नियम एवं नैतिक मूल्य होते हैं। क्या आज की शिक्षा विद्यार्थियों को नैतिक मूल्य उत्पन्न करने में समर्थ है?

यह एक ज्वलन्त प्रश्न है इसी, आलोक में इस शोध समस्या का विचार शोधार्थी के मस्तिष्क में आया। प्रायः देखा जा रहा है कि लोग अपने बच्चों को राजकीय माध्यमिक विद्यालयों की अपेक्षा, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों में पढ़ाना अधिक पसन्द कर रहे हैं। अतः शोधार्थी ने केन्द्रीय विद्यालयों तथा जयपुर प्रांत के राजकीय विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों में मूल्यों के तुलनात्मक अध्ययन का निश्चय किया। दो अलग-अलग तरह के विद्यालयों केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध विद्यालय में मूल्यों के विकास पर किस प्रकार कार्य किया जाता है, इसका भी अध्ययन होना चाहिये। जिसे ध्यान में रखकर सुधारात्मक कदम बढ़ाया जा सके।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

- गुप्ता (2001) "भारतीय शिक्षित जनमानस में विविध जीवन मूल्यों के सापेक्ष महत्वों का अध्ययन" के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि सम्पर्क समूह के द्वारा आत्मस्वीकृत मूल्य वरीयता क्रम के विश्लेषण में वर्तमान एवं भावी शिक्षकों के मध्य पनप रही स्थिति की झलक मिलती है, इनमें नैतिकता और बौद्धिकता सर्वोपरि है। सामाजिक, भावात्मक, व्यावहारिकता तथा आध्यात्मिकता को मध्य स्थान प्रदान किया गया। भौतिकता तथा राजनैतिकता अंतिम सोपान पर रहे। जबकि कलात्मकता तथा सांस्कृतिकता, उससे कुछ उच्च स्थान पर भारतीय शिक्षित जनमानस में विद्यमान हैं।
- श्रीवास्तव (2004) "ए स्टडी ऑफ स्कूल एक्टीविटीज प्रमोटिंग वैल्यू इन्हेरेंट इन फंडामेंटल ड्यूटीज मेंशनड इन द इंडियन कॉन्स्टिट्यूशन" में अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि रायपुर एवं छत्तीसगढ़ के मिसनरी स्कूलों में कर्तव्य जागरूकता सर्वोच्च तथा लखनऊ के सरकारी स्कूल में निम्न पाई गई। राज्य स्तर पर छत्तीसगढ़ प्रथम तथा दिल्ली अंतिम रहा। छात्रों में कर्तव्य जागरूकता छात्राओं की अपेक्षा सार्थक रूप से कम स्तर पर रही।
- अनिल कुमार एवं आईशाबी (2008) "स्टूडेंट्स अवरेयनैस ऑफ वैल्यूज इन द कॉन्टेंट ऑफ सैकेण्डरी लेवल इंग्लिश" अध्ययन के निष्कर्षों से यह ज्ञात हुआ कि सैकेण्डरी स्तर के अंग्रेजी भाषा के पाठ्यक्रम छात्रों के आयु वर्ग के लिए आवश्यक मूल्यों से समृद्ध है। 36 प्रतिशत छात्रों में मूल्यों के प्रति जागरूकता पाई गई। छात्रों और छात्राओं की मूल्यों के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- लिंगहोल्म (2009) "हेल्थ मोटिव्स एण्ड लाईफ वैल्यूज-ए स्टडी ऑफ यंग पर्सन्स रीजंस फार हेल्थ" में अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि नवयुवकों के स्वस्थ अनुभवों तथा विचारों को समझना, उनके स्वास्थ्य उद्देश्यों को जाने बिना संभव नहीं है। जो आंतरिक, बाहरी तथा मौलिक होते हैं। स्वास्थ्य उद्देश्यों से ही नवयुवकों का जीवन अर्थपूर्ण होता है। विभिन्न प्रकार के जीवन मूल्य नवयुवकों के स्वस्थ को स्पष्ट करते हैं, कि वे क्यों स्वस्थ हैं। विभिन्न स्कूलों के नवयुवकों के जीवन मूल्यों तथा स्वास्थ्य उद्देश्यों में भिन्नता पाई गई।
- यादव, शालिनी (2012) "इमोशनल इन्टेलीजेंस एण्ड वैल्यूज ऑफ एडोलोसेंट्स स्टडींग इन गवर्नमेंट एण्ड नॉन गवर्नमेंट स्कूल्स" में प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुये कि सरकारी तथा गैर सरकारी विद्यालयों के किशोरों के बौद्धिक स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया, दोनों का बौद्धिक स्तर सामान्य पाया गया। बालक बालिकाओं का बौद्धिक स्तर समान ही रहा। सरकारी विद्यालयों के किशोरों ने उच्च स्तर अन्तर्निहित मूल्यों को तथा निम्न स्तर धार्मिक मूल्यों को प्रदान किया गया। गैर सरकारी विद्यालयों के किशोरों की तुलना में सरकारी विद्यालयों के किशोरों के सामाजिक, लोकतान्त्रिक, ज्ञानात्मक व परिवार मान मूल्य उच्च पाये गये।

समस्या कथन**केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन अध्ययन के उद्देश्य**

1. केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पनाएँ

1. केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

न्यादर्श

1. शोध हेतु न्यादर्श का चयन जयपुर के केन्द्रीय व राजकीय माध्यमिक विद्यालयों से लिया गया है।
2. शोधकार्य हेतु कक्षा 9 एवं 10 के विद्यार्थियों को लिया गया है।
3. प्रस्तुत शोध में केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं को ही सम्मिलित किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन की शोध विधि "वर्णनात्मक सर्वेक्षण प्रणाली" से सम्बन्धित है।

अध्ययन के प्रतिदर्श-

प्रस्तुत शोध में उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श के अन्तर्गत जयपुर जिले से केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालय का चयन सोद्देश्य विधि से किया गया है। इस अध्ययन से अनुपातिक प्रणाली के तहत केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय जयपुर के 150 एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालय के 150 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया है, जिसका विवरण निम्नानुसार है:-

क्र.सं.	विद्यालय	छात्र	छात्रा	सम्पूर्ण योग
1.	केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय नं. 1 जयपुर	75	75	150
2.	राजकीय माध्यमिक विद्यालय, जयपुर	75	75	150
	योग	150	150	300

प्रस्तुत अध्ययन के उपकरण

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत अध्ययन के लिए एस.पी. कुलश्रेष्ठ के प्रमापीकृत "मूल्य अध्ययन" प्रश्नावली हिन्दी भाषा में संशोधित, परिवर्धित एवं अंगीकृतरूप, 1970 का प्रयोग किया गया है जिसमें सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों से सम्बन्धित प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है।

अनुसंधान में प्रयुक्त सांख्यिकी

शोधकर्त्री का प्रमुख उद्देश्य केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों एवं छात्राओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोधकर्त्री ने उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं को दृष्टि में रखते हुए निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया है:-

मध्यमान: मध्यमान का प्रयोग चरों पर प्राप्त अंकों का औसत ज्ञात करने हेतु किया गया है। इसमें भी दीर्घ विधि का प्रयोग किया गया है।

मानक विचलन: मानक विचलन का प्रयोग समूह के प्राप्तांकों का विचलन तथा मानक त्रुटि ज्ञात करने हेतु किया गया है।

Z परीक्षण: Z परीक्षण का प्रयोग समूहों के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य सं. 1: केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मूल्यांकन का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना सं. 1: केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मूल्यांकन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी सं. 1: Z अनुपात केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में 'सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यांकन सम्बन्धी सम्प्राप्ति'

मूल्य	न्यादर्श (N)	केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय के छात्र		राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्र		Z मूल्य	स्वीकृत / अस्वीकृत
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
सैद्धान्तिक	75	47.1	3.47	46.3	6.26	0.97	स्वीकृत
आर्थिक	75	44.1	4.57	46.5	6.31	2.67	अस्वीकृत
सौन्दर्यात्मक	75	38.7	5.45	35.6	6.22	3.25	अस्वीकृत
सामाजिक	75	36.6	5.68	41.0	6.20	4.53	अस्वीकृत
राजनैतिक	75	38.0	4.20	36.3	7.00	1.80	स्वीकृत
धार्मिक	75	35.5	4.52	36.0	6.30	0.56	स्वीकृत

सारणी संख्या - 1: में प्रदर्शित परिणाम सम्बन्धी आँकड़ों के अनुसार स्पष्ट है कि केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालय के अध्ययनरत छात्रों के आर्थिक, सौन्दर्यात्मक तथा सामाजिक मूल्यांकन सम्बन्धित मध्यमानों के मूल्य क्रमशः 0.97, 1.80 एवं 0.56 हैं, जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणीमान 1.97 से अधिक पाये गये हैं। अतः निराकरणाय परिकल्पना "केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के मूल्यांकन में सार्थक अन्तर नहीं है।" इन मूल्यांकन के लिये 0.05 पर निरस्त की जाती है। जबकि सैद्धान्तिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यांकन संबंधित मध्यमानों के टी मूल्य क्रमशः 1.08, 0.15 तथा 1.12 हैं, जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणीमान 1.97 से कम पाये गये हैं। अतः निराकरणाय परिकल्पना "केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के मूल्यांकन में सार्थक अन्तर नहीं है।" इन मूल्यांकन के लिये 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकार की जाती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि "केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के आर्थिक, सौन्दर्यात्मक तथा सामाजिक मूल्यांकन में सार्थक अन्तर पाया गया जबकि सैद्धान्तिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यांकन में अन्तर नहीं पाया गया। जहाँ सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक तथा राजनैतिक मूल्यांकन के मध्यमान केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के अधिक हैं, वहीं आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक मूल्यांकन के मध्यमान राजकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के अधिक हैं।

उद्देश्य सं. 2: केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मूल्यांकन का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना 2: केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मूल्यांकन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी सं. 2: Z अनुपात केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय तथा राजकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं में 'सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों सम्बन्धी सम्प्राप्ति'

मूल्य	न्यादर्श (N)	केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय की छात्राएँ		राजकीय माध्यमिक विद्यालय की छात्राएँ		Z मूल्य	स्वीकृत / अस्वीकृत
		मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन		
सैद्धान्तिक	75	46.5	3.33	45.5	3.29	1.85	स्वीकृत
आर्थिक	75	44.0	3.60	44.2	3.66	0.33	स्वीकृत
सौन्दर्यात्मक	75	40.8	2.70	40.0	4.50	1.32	स्वीकृत
सामाजिक	75	36.5	4.84	36.0	4.48	0.65	स्वीकृत
राजनैतिक	75	34.5	6.15	34.9	4.32	0.48	स्वीकृत
धार्मिक	75	38.0	5.20	39.3	3.62	1.77	स्वीकृत

सारणी संख्या 2: में प्रदर्शित परिणाम सम्बन्धी आँकड़ों के अनुसार स्पष्ट है कि केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों सम्बन्धित मध्यमानों के Z मूल्य क्रमशः 1.85, 0.33, 1.32, 0.65, 0.48 तथा 1.77 हैं, जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणीमान 1.97 से कम पाये गये हैं। अतः निराकरणाय परिकल्पना "केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।" इन मूल्यों के लिये 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकार की जाती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं होता है।

जहाँ सैद्धान्तिक मूल्य का मध्यमान केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं में अधिक हैं, वहीं आर्थिक, सौन्दर्यात्मक मूल्य का मध्यमान राजकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं में अधिक हैं। जबकि आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों के मध्यमान लगभग बराबर पाये गये।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष:

1. केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्रों के आर्थिक, सौन्दर्यात्मक तथा सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया। जबकि सैद्धान्तिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों में अन्तर नहीं पाया गया।
2. केन्द्रीय माध्यमिक विद्यालय एवं राजकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं के सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।

अध्ययन की उपयोगिता:

यह पूर्णरूपेण सत्य है कि बच्चों के जीवन मूल्यों पर परिवार का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। परन्तु इसके अतिरिक्त विद्यालय का वातावरण, पाठ्यक्रम, शिक्षकों का व्यवहार तथा समाज का वातावरण भी बच्चों के अन्दर विकसित होने वाले जीवन मूल्यों पर अपना अलग-अलग प्रकार से प्रभाव डालता है। शिक्षा सभी देशों की मेरूदण्ड है और जीवन मूल्य सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया का परिणाम है। आज के आधुनिक युग में मूल्यों का बच्चों में समावेश करना समाज, परिवार तथा राष्ट्र की माँग है। इसलिए आवश्यक है कि छात्रों में मूल्यों का विकास किया जा सके। जीवन मूल्य मानव जीवन का आधार है इसका पालन करने से ही मनुष्य लौकिक तथा पारलौकिक जीवन को सफल बना सकता है। वह समाज तथा परिवार के सभी सदस्यों का स्नेह प्राप्त कर सकता है। संतुलित व्यक्तित्व के विकास में मूल्यों का विशेष महत्व है।

इस शोध की शैक्षिक उपयोगिता इस प्रकार है

1. मूल्यों के परीक्षण के परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यालय का वातावरण, पाठ्यक्रम समाज तथा परिवार का वातावरण छात्रों के भीतर मूल्यों का विकास करता है। अतः विद्यालय, समाज तथा परिवार का वातावरण नैतिकता व मूल्यों से परिपूर्ण तथा स्नेह से युक्त बनाना चाहिए।

2. परीक्षण में देखा गया कि छात्राओं में औसत रूप से मूल्य अधिक पाये गए, क्योंकि इनके कार्य दायित्व निश्चित रहते हैं। अतः छात्रों के भी कार्य दायित्व निश्चित करने की व्यवस्था होनी चाहिए।

3. समाज तथा परिवार के प्रत्येक सदस्य का यह मूल कर्तव्य होना चाहिए कि वह दूसरों के साथ सदैव प्रेम तथा स्नेहपूर्ण व्यवहार करे जिससे छात्रों में इस गुण का विकास हो सके। क्योंकि छात्र अनुकरण से सर्वाधिक सीखता है।

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष अध्यापकों, शिक्षाविदों, शिक्षाधिकारियों एवं शासन के लिए बहुत उपयोगी है। विद्यार्थियों में पाये जाने वाले मूल्यों को प्रभावित करने वाले कारणों को जानकर विद्यार्थियों के व्यवहार को वांछित दिशा में मोड़ा जा सकता है। बिना उपयुक्त कारण को जाने उनमें सुधार की बात सोचना समय, शक्ति व धन का दुरुपयोग तथा प्रयास को असफल बनाना है। अतः मूल्यों की जानकारी प्राप्त करके ही अध्यापक, शिक्षाविद् तथा शिक्षाधिकारी छात्रों में नैतिक मूल्यों के विकास में बहुत कुछ कल्याणकारी कार्य कर सकते हैं।

भावी शोध हेतु सुझाव

जीवन मूल्यों का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है, इसे हम सीमा में नहीं बांध सकते हैं। अध्ययन कार्य के समय अनेक ऐसी नैतिक समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट हुआ जिस पर यदि शोध कार्य किया जाये तो बहुत से ऐसे तथ्य प्रकाश में आ सकते हैं जो शोध के परिणामों की पुष्टि कर सकते हैं तथा उसे परिवर्तित एवं परिमार्जित भी कर सकते हैं।

वर्तमान शोध सीमित समय व साधनों में किया गया है, जिससे शोध कार्य हेतु नामांकित कई क्षेत्रों को छोड़ दिया गया है। अतः मूल्य व नैतिकता से जुड़े कुछ क्षेत्र निम्नलिखित हैं जिस पर शोध कार्य किया जा सकता है-

- विद्यार्थियों में मूल्यों का अध्ययन विभिन्न स्तर की कक्षाओं पर किया जा सकता है।
- इसका अध्ययन विभिन्न आयु स्तर के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
- मूल्यों पर सामाजिक तथा आर्थिक स्थितियों के प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- सामाजिक परम्पराओं, मान्यताओं का छात्रों के मूल्यों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जा सकता है।
- सामान्य तथा पब्लिक विद्यालयों के छात्रों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- मूल्यों की शिक्षा हेतु विविध पाठ्य-सहगामी क्रियाओं, जनसंचार, विभिन्न विषयों के मूल्य परक शिक्षण, सामाजीकरण, मूल्य विश्लेषण, योग, जीवनी पाठन आदि की प्रभावोत्पादकता जानने के लिए अनुसंधान कार्य किये जा सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कुमार, (2013) "वैल्यूज ऑफ सीनियर सैकेण्डरी स्कूल टीचर्स" जनरल ऑफ एजुकेशनल एण्ड साइकोलॉजिकल रिसर्च, वा. 3(1) पृ. 8-10।
2. यादव, शालिनी (2012) "इमोशनल इन्टेलीजेंस एण्ड वैल्यूज ऑफ एडोलोसेंट्स स्टडींग इन गवर्नमेंट एण्ड नॉन गवर्नमेंट स्कूल्स" जनरल ऑफ द एजुकेशनल एण्ड साइकोलॉजी रिसर्च, वा. 2(2) पृ. 137-140।
3. गुप्ता, भावना एवं यादव, आर.के. (2011) "एडजस्टमेंट एण्ड वैल्यू ऑफ अडोलसेंट मेल एण्ड फीमेल स्टूडेंट्स" जनरल ऑफ द एजुकेशनल एण्ड साइकोलॉजी रिसर्च, वा. 2(2) पृ. 112-114।
4. दास, एवं सत्संगी, (2009) "वैल्यू एण्ड लाइफ सेटिसफेक्शन" आई.जे.पी.ई. पटना, अंक 40(1-2) पृष्ठ सं. 19-22।
5. कपूर, अर्चना (2009) "पारिवारिक परिवेश का बालक एवं बालिकाओं के मूल्य विकास पर प्रभाव" भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, वर्ष 28 अंक 2, जुलाई दिसम्बर 2009।
6. गुप्ता, आर.ई.. (2007) "उच्च शिक्षण संस्थाओं की छात्राओं के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन" भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वर्ष 26 अंक 2।
7. डुल, आई. एवं सुमन (2007) "वैल्यूज ऑफ द स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू जेंडर एण्ड सोशियो इकोनॉमिक स्टेटस" एजुट्रेक्स, हैदराबाद वा. 6(12) पृ. 36-39।
8. सारस्वत, आर. (2005) "श्रीमद् भगवद्गीता में निहित सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों का उच्चस्तर के पाठ्यक्रम में समावेश" अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध, डी.ई.आई. दयालबाग।
9. लैंडहोल्म, एच. (2009) "हेल्थ मोटिव्स एण्ड लाइफ वेल्यूज-ए स्टडी ऑफ यंग पर्सन्स रीजंस फार हेल्थ" इंटरनेशनल डिजिटेशन एबस्ट्रेक्ट, वर्ष 71, अंक 1।
10. काश्मीरी, एम. (2008) "ए स्टडी ऑफ द मोस्ट बेसिक लाइफ वेल्यूज ऑफ टीचर्स एण्ड स्टूडेंट्स इन पाकिस्तान" पीएच.डी. शोध, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ मॉडर्न लैंग्वेज, इस्लामाबाद (पाकिस्तान)।